GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
May-June:2025

अटल बिहारी वाजपेयी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का ऐतिहासिक अध्ययन

दीप सिंह तोमर (शोधअध्येता)
इतिहास अध्ययनशाला जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर मप्र
ईमेल -deepsinghtomar19@gmail.com, 9826243223

सारांश

भारतीय राजनीति में अटल जी ने अपने व्यक्तित्व तथा कृतित्वों के द्वारा राष्ट्रवाद के विचारों को कविता ,नीतियों के माध्यम से तथा अपनी ओजस्वी वाणी के प्रभाव से भारतीय जनमानस पर अमिट छाप छोड़ी। प्रधानमंत्री के रूप में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से उनका शासन ऐतिहासिक उपलब्धियों से भरा रहा तथा विपक्षी नेता के तौर पर उन्होंने सदैव संयम, लोकतांत्रिक मर्यादा व शिष्टाचार का पालन किया।

कवि, संपादक तथा पत्रकार के रूप में उनका व्यक्तित्व बहुमुखी था। वाजपेयी के कृतित्व भारत को मजबूत आधार, आत्मनिर्भर तथा गौरवशाली राष्ट्र के रूप में स्थापित करने में मील के पत्थर सिद्ध हुए। अटल बिहारी वाजपेयी का व्यक्तित्व भारतीय राजनीति में शुचिता का आदर्श नेतृत्व, संतुलित विचारधारा का प्रतीक है, जिसका ऐतिहासिक महत्व भारतीय इतिहास में जीवंत व अक्षुण्ण रहेगा।

बीजशब्द:- सुशासन, व्यक्तित्व, कृतित्व, लोकतांत्रिक स्तंभ, शुचिता

शोध उद्देश्य :-

- वाजपेयी जी के व्यक्तित्व की विशेषताओं का अध्ययन करना
- राजनीतिक, काव्यात्मक और कूटनीतिक कृतित्वों का विश्लेषण करना

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
May-June:2025

- वाजपेयी जी के वक्तव्य,विचार,संवाद शैली का भारतीय राजनीति व समाज पर प्रभाव का अध्ययन करना
- अटल बिहारी वाजपेयी की समकालीन भारतीय राजनीति एवं समाज में योगदान का अध्ययन

शोध प्रविधिः- यह शोधपत्र ऐतिहासिक,गुणात्मक और वर्णनात्मक होगा।

- **ऐतिहासिक शोध विधिः** अटल बिहारी वाजपेयी के कृतित्व का ऐतिहासिक संदर्भों में अध्ययन।
- **वर्णनात्मक शोध विधि :** वाजपेयी जी के व्यक्तित्व, विचार और कार्यों का वर्णनात्मक अध्ययन।
- **सामग्री विश्लेषण विधिः** उनके वक्तव्य, लेखों, कविताओं और संसदीय वृत्तांतों का सामग्री आधारित अध्ययन करना।

प्रस्तावना-

विश्व कल्याण के उदार भाव को मूर्त्तरूप प्रदान करने हेतु भारत के 'स्व' की सुदीर्घ यात्रा हम सभी के लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत रही है। स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणा स्वधर्म,स्वदेशी और स्वराज की 'स्व' त्रयी में निहित है। भारत के सनातन मूल्यों के आधार पर होने वाले नवोत्थान को विश्व स्वीकार कर रहा है। वसुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा के आधार पर विश्वशांति, विश्व बंधुत्व व मानव कल्याण के लिए समग्र चिंतन व नेतृत्व की क्षमता हमारी संस्कृति में विद्यमान है। इन संस्कृति की जड़ों से पोषित व्यक्तित्व ही ज्ञान व ऋषि परम्परा को भावी पीढ़ी तक पहुँचा सकता है। ऐसे ही भारतीय संस्कृति के गुणों से युक्त अटल बिहारी वाजपेयी का

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
May-June:2025

व्यक्तित्व एवं उनके कृतित्व बहुआयामी दृष्टि से समाज व राष्ट्र के लिए उपयोगी सिद्ध हों ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में यही इस शोध पत्र का उद्देश्य है।

अटल बिहारी वाजपेयी का प्रारंभिक जीवन और राजनीतिक यात्राः-

अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म पं. कृष्ण बिहारी वाजपेयी के शिंदे की छावनी,ग्वालियर मप्र स्थित घर में ब्रह्ममुहूर्त्त की पावन बेला में 25 दिसंबर, 1926 ई. को हुआ था।[1] जन्म हुआ तब कौन जानता था? कि यह बालक देश का प्रधानमंत्री बनकर राजनीति में शुचिता का आदर्श स्थापित करेगा। संस्कृति, संस्कार, साहित्य के प्रति रुचि तथा काव्य के गुण वाजपेयी जी को अपने पिता व परिवार से प्राप्त हुएथे।पारिवारिक वातावरण साहित्यिक होने के कारण अटल बाल्यकाल से ही तुकबंदी करने लगे थे। 'ताजमहल' उनके द्वारा लिखी गई प्रथम कविता है।[2] स्नातक तक की पढ़ाई वाजपेयी ने ग्वालियर में स्थित विक्टोरिया कॉलेज जो अब महारानी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय है से की थी। इस दौरान वे छात्र संघ के सचिवऔर उपाध्यक्ष भी रहे अर्थात् वाजपेयी जी में राजनैतिक चेतना विद्या अध्ययन के समय से ही दिखाई देने लगी थी। जिसे उन्होंने अपने भाषण , वाक्पटुता व संवाद शैली के द्वारा और अधिक धारदार तथा मजबूत बनाया। ओजस्वी भाषण शैली जिसमें तार्किकता के साथ भावनात्मक और राष्ट्रीय चेतना का अद्भुत मिश्रण होता था। इसी शैली के कारण विद्यार्थी जीवन में वाजपेयी जी प्रयागराज में आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता में ट्रेन लेट होने के कारण प्रतियोगिता के समाप्त होने पर पहुँचे और अनुनय-विनय करने पर उन्हें अपना भाषण देने अवसर दिया गया। उनके भाषण का सम्मोहन ऐसा था कि जब परिणाम घोषित किए गए तो अटल बिहारी प्रथम आए। इस प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका में डॉ. हरिवंश राय बच्चन भी मौजूद थे।[3]

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
May-June:2025

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की नियमित शाखा में अटल जी का शारीरिक, मानसिक विकास हुआ और इसी व्यक्ति निर्माण के पवित्र स्थान पर उनकी राजनैतिक चेतना राष्ट्र के प्रति समर्पित होने के लिए प्रेरित हुई। विस्तारक जीवन में उनकी कार्यशैली से प्रभावित होकर पं. दीनदयाल उपाध्याय जी ने अटल जी का परिचय डॉ. मुखर्जी से करवाया और फिर वाजपेयी जी ने डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी का निज सचिव रहते हुए अपनी अखिल भारतीय स्तर पर पहचान बनाई। डॉ. मुखर्जी की संदिग्ध परिस्थितियों में मृत्यु से उत्पन्न हुई राजनैतिक शून्यता को भरने तथा उनके अधूरे स्वप्न को पूरा करने के उद्देश्य से अटल बिहारी वाजपेयी प्रत्यक्ष राजनीति में आए और 1957 ई. में बलरामपुर संसदीय क्षेत्र से निर्वाचित होकर पहली बार लोकसभा के सदन में पहुँचे।[4]

अटल बिहारी वाजपेयी का व्यक्तित्व

ओजस्वी वक्ता और संवाद शैली:-

राजनीति में अटल जी ने अपनी प्रभावशाली वाणी से एक अलग पहचान बनाई। उनके संसद में, भाषण के दौरान सर्वाधिक संख्या उपस्थित होती थी तथा पक्ष व विपक्ष दोनों ओर के निर्वाचित संसद सदस्य उनके भाषण को बड़े ही ध्यान से सुनते थे। जवाहरलाल नेहरू भी वाजपेयी के भाषण शैली से प्रभावित थे। इसी प्रभाव के कारण तीसरी लोकसभा के चुनाव प्रचार में जब वे बलरामपुर पहुँचे तो उन्होंने अपनी जनसभा में कहा कि “जनसंघ में कुछ लोग अच्छे हैं।"[5] नेहरू की इस टिप्पणी संकेत वाजपेयी की ओर था। उनके वक्तव्यों में ठहराव,संयम, राष्ट्रभाव था, जो उनके व्यक्तित्व को अद्वितीय बनाता था।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
May-June:2025

साहित्यिक और कविहृदय अटल:-

साहित्य और कविताएँ व्यक्ति में मानवीय संवेदनाओं के निर्माण का कारण होती हैं, इससे समाज में चेतना का जागरण होता है। यह अंधकार में प्रकाश की तरह बौद्धिक चेतना, सामाजिक, मानवीय तथा राष्ट्रीय प्रेरणा का कार्य करती है। ये कविताएँ तनाव की स्थिति में मानव मानसिक शांति प्रदान करती हैं।

अटल जी के काव्य साहित्य में राष्ट्रीयता के स्वर, चुनौती के स्वर, मानवीयता के स्वर तथा राष्ट्रीय जनमानस की भावनाओं की अभिव्यक्ति वाजपेयी की कविताओं की शोभा है। उन्होंने अपनी पहली कविता 'ताजमहल' में उसके सौन्दर्य की बजाय उन श्रमिकों की पीड़ा को महत्त्व दिया जिन्होंने असह्य यातनाओं को सहकर अपने खून पसीने से ताजमहल का निर्माण किया।

“जब रोया हिन्दुस्तान सकल,

तब बन पाया यह ताजमहल”[6]

मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्त करती हुईं अटल जी की उक्त पंक्तियाँ उनके कविहृदय की सौम्यता परिचायक हैं। उनके राष्ट्रीय स्वरों में विभाजन विभीषिका से पीड़ित लोगों की पीड़ा को उन्होंने काव्य में प्रस्तुत की।

पंद्रह अगस्त का दिन कहता,आज़ादी अभी अधूरी है।

सपने सच होने बाक़ी हैं,रावी की शपथ न पूरी है।।[7]

अखंड भारत को स्वतंत्र कराने के लिए कांग्रेस ने जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में सन् 1929 ईसवी में रावी तट पर जो शपथ ली थी वह आज़ादी के दौरान तोड़ दी गई और अखंड भारत के दो टुकड़े कर एक नया देश पाकिस्तान मज़हब के आधार पर बना दिया गया।इस अधूरी आज़ादी को वाजपेयी जी अपने काव्य में व्यक्त करते हैं और अखंड भारत निर्माण

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
May-June:2025

करने की शपथ सभी भारतीयों के मन मस्तिष्क में जीवित बनी रहे जिससे वे इस स्वप्न को साकार करने की ओर क्रियाशील बने रहें।

कृतित्व के विभिन्न आयाम:-

अपने जीवन काल में वाजपेयी जी ने विभिन्न कार्यों व दायित्वों का निर्वहन किया भले ही उनकी पहचान एक राजनेता के रूप में हो परंतु उन्होंने अपने कृतित्वों के उत्कृष्ट निर्वाह से जिस क्षेत्र में कार्य किया उसमें उच्च प्रतिमान स्थापित किए । एक तरफ़ उन्होंने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक रहने के दौरान संघ विस्तार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई वहीं दूसरी ओर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं का सफलतापूर्वक संपादन कर राष्ट्रीय विचारों का प्रचार प्रसार भी किया। पत्रकारीय आकाश में नक्षत्र के समान अटल बिहारी वाजपेयी ने

“राष्ट्रधर्म तो कल्पवृक्ष है ,संघ शक्ति ध्रुव तारा है ।
बने जगद्गुरु भारत फिर से यह संकल्प हमारा है।।”[8]

मासिक पत्रिका राष्ट्रधर्म भारत को जगद्गुरु बनाने के संकल्प के साथ २६ अक्तूबर,१९५० को प्रारंभ की। इसकी अभूतपूर्व सफलता ने उन्हें साप्ताहिक पत्रिका पाँचजन्य निकालने की प्रेरणा दी ।आपातकाल में कई प्रतिबंधों झेलने के बावजूद उनके द्वारा प्रारंभ व संपादित की जाने वाली पत्र-पत्रिकाएं आज भी अविच्छिन्न रूप से प्रकाशित हो रही हैं,जो उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति की द्योतक हैं। विदेश मंत्री के रूप में वाजपेयी द्वारा ४ अक्तूबर,१९७७ को संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी में भाषण देकर हिंदी को वैश्विक स्तर पर एक नई पहचान दिलायी और भारत के सांस्कृतिक गौरव को बढ़ाया ।अपने संवाद कौशल के द्वारा उन्होंने यह सिद्ध किया कि हिंदी केवल आम जनमानस व साहित्य सृजन की भाषा नहीं अपितु राजनैतिक ,कूटनीतिक तथा वैश्विक विमर्श की भी सशक्त भाषा है। अपने राजनैतिक जीवन में अधिकांश समय

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
May-June:2025

वाजपेयी जी विपक्ष में रहे लेकिन उन्होंने कभी व्यक्तिगत आरोप-प्रत्यारोप की राजनीति नहीं की बल्कि राष्ट्रीय विषयों पर उनका भाषण समाधानमूलक सुझाव ,तर्क ,तथ्य तथा उनके द्वारा की गई सकारात्मक आलोचना उन्हें एक आदर्श विपक्ष नेता के रूप में भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान दिलाती है।

अटलजी 11वीं लोक सभा में लखनऊ से निर्वाचित होकर विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश के १६ मई,१९९६ को प्रधानमंत्री बने,परंतु तेरह दिन बाद ही उन्हें संसदीय लोकपटल पर बहुमत प्राप्त न होने पर त्यागपत्र देना पड़ा। “अपने अल्प मत को बहुमत में बदलने के लिए मैंने सांसदों की क्रय-विक्रय जैसा ग़लत कार्य नहीं किया सत्ता की चादर को मैंने तेरह दिन बाद बेदाग़ वापस रख दिया।”[9] उनकी इस टिप्पणी और कृतित्व से यह स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि वाजपेयी राजनीति को राष्ट्र सेवा व जन-आकांक्षाओं की पूर्ति का माध्यम मानते थे न कि स्वार्थपूर्ति का।

सन् १९९८ व १९९९-२००४ ईस्वी के प्रधानमंत्रित्व काल में वाजपेयी ऐसे पहले प्रधानमंत्री थे जिन्होंने देश में शेरशाह सूरी के बाद बड़े स्तर पर राष्ट्रीय राजमार्गों का निर्माण करवाया तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए प्रधानमंत्री सड़क जैसी क्रांतिकारी योजनाओं को लागू किया। वैश्विक स्तर पर शक्ति संतुलन बनाने की दृष्टि से पोखरण में द्वितीय परमाणु परीक्षण करके भारत को परमाणु संपन्न राष्ट्र बनाने की दिशा में एक कदम और बढ़ाया तथा विश्व को यह संकेत दिया कि भारत संप्रभु राष्ट्र है और यह राष्ट्रीय हित के लिए कठोर निर्णय लेने में सक्षम है।

पड़ोसी देशों के साथ अपने संबंध सुधारने तथा सीमा पर पाकिस्तान के साथ तनाव कम करने की दृष्टि से उन्होंने लाहौर की बस यात्रा की लेकिन पाकिस्तान द्वारा जब भारत पर कारगिल

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
May-June:2025

युद्ध थोपा गया तो अटल ने इस युद्ध का निर्णायक नेतृत्व किया और भारत को विजय दिलायी। शिक्षा की दृष्टि से उन्होंने 'सर्वशिक्षा अभियान' प्रारंभ किया और सामाजिक कल्याण की दृष्टि से उन्होंने कई कल्याणकारी योजनाएं क्रियान्वित कीं।

विनिवेश,IT क्षेत्र ,दूरसंचार क्रांति तथा उसके लिए आधारभूत ढांचे का निर्माण कराना उनकी आर्थिक कृतित्वों का एक महत्वपूर्ण आयाम है जिसमें उन्होंने नरसिम्हा राव की सरकार में किये गए उदारीकरण को और भी गति प्रदान की तथा उनका मानना था कि "अर्थव्यवस्था और व्यापार का सबसे बड़ा शत्रु गंदी राजनीति होती है इसके विपरीत सुशासन अर्थव्यवस्था का सर्वोत्तम मित्र होता है।"[10]

इसी नीति का पालन करते हुए वाजपेयी ने सुशासन स्थापित करने का प्रयास किया जिसमें उन्हें कुछ हद तक सफलता भी मिली। इसीलिए वाजपेयी के जन्मदिन को 'सुशासन दिवस' के रूप में मनाया जाता है। प्रधानमंत्री के तौर पर वाजपेयी जी ने गठबंधन की सरकार को सफलतापूर्वक संचालित करके यह स्पष्ट कर दिया कि वे एक सशक्त नेतृत्वकर्ता के साथ-साथ सर्वस्वीकार्य नेता भी थे तथा उन्होंने भारत को अपने कृतित्व के सामाजिक ,आर्थिक ,राजनैतिक व सांस्कृतिक आयाम की दृष्टि से अपने कार्यकाल को 'विकास और सुशासन' के युग के रूप में स्थापित किया ।

निष्कर्ष:-

अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में एक ऐसे युग पुरुष थे जिन्होंने अपने व्यक्तित्व तथा कृतित्व से भारतीय राजनीति में शुचिता का आदर्श स्थापित किया तथा उनकी साहित्यिक कृतियों में भारतीय संस्कृति के प्रति गौरव की अनुभूति ,राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा जैसे नैतिक मूल्यों की झलक मिलती है ,जिससे यह सिद्ध होता है कि उनकी कविताएँ भारतीय

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
May-June:2025

ज्ञान परंपरा की संवाहक हैं । उनके द्वारा गर्व एवं आत्मविश्वास के साथ जिस प्रकार हिन्दी को विश्व पटल पर प्रतिष्ठित किया गया यह स्पष्ट करता है कि वाजपेयी का हिंदी प्रेम केवल औपचारिक नहीं बल्कि हिन्दी तो उनके व्यक्तित्व व कृतित्व में रची बसी थी।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

शर्मा,चंद्रिका प्रसाद (संपादक),(२०२०),कुछ लेख कुछ भाषण,किताबघर प्रकाशन,नई दिल्ली,पृष्ठ-२४४

वाजपेयी,अटलबिहारी,(२०१२),चुनी हुई कविताएँ,प्रभात पेपर बैक्स,नई दिल्ली,पृष्ठ-९

शर्मा,चंद्रिका प्रसाद(संपादक),उपर्युक्त,पृष्ठ-२४५

घटाटे,ना.मा.(संपादक),(२०१४),संकल्प काल,प्रभात प्रकाशन,नई दिल्ली,पृष्ठ-९

शर्मा,चंद्रिकाप्रसाद(संपादक),(२०२०),शक्ति से शांति,किताबघर प्रकाशन,नई दिल्ली,पृष्ठ-४४

वाजपेयी,अटलबिहारी,(२०१२),उपर्युक्त

नंदन,कन्हैयालाल(संपादक),(२०२४),क्या खोया क्या पाया,राजपाल प्रकाशन,नई दिल्ली,पृष्ठ-७२

मालवीय,सौरभ,(२०१८),राष्ट्रवादी पत्रकारिता के शिखर पुरुष अटलबिहारी वाजपेयी,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली,पृष्ठ-१७

इंदापुरकर,यशवंत(संपादक),(२०००),अमृत अटल,स्वदेश प्रकाशन,ग्वालियर,पृष्ठ-२७

प्रधानमंत्री अटलबिहारी चुने हुए भाषण,(२०००),खंड-२,प्रकाशन विभाग,सूचना प्रसारण मंत्रालय,भारत सरकार नई दिल्ली,पृष्ठ-५०